दैनिक जागरण (दैनिक समाचार पत्र) 28-9-2015
पृष्ठ - 4

982/972

नवोन्मेषी किसानों के अनुभव का कृषि में हो इस्तेमाल

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में नवोन्मेषी कृषक सम्मेलन का आयोजन।

गौतम कुमार मिश्रा, पश्चिमी दिल्ली

परंपरा से हटकर सृजनात्मक सोच रखने वाले नवोन्मेषी कृषकों का सम्मेलन पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न राज्यों से करीब 50 कृषक जुटे। किसानों ने अपनी सफलता की कहानी को कृषि वैज्ञानिकों व अपने साथी कृषकों से साझा किया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि नवोन्मेषी कृषक अपने अनुभव से अर्जित ज्ञान का प्रसार अपने क्षेत्र में करें ताकि क्षेत्र के किसान इसका लाभ उठा सकें।

निदेशक ने कहा कि नवोन्मेषी सोच से हासिल तकनीकों का संरक्षण किया जाना चाहिए। इसके लिए किसानों को खुद जागरूक होना होगा। उन्हें अपनी उपलब्धियों का रजिस्ट्रेशन, डॉक्यूमेंटेशन, पेटेंट कराना चाहिए। पूसा संस्थान इस कार्य में उनकी मदद करेगा। ऐसा करके इस तकनीकी ज्ञान का प्रसार किया जा सकता है। निदेशक ने कहा कि आज भी देश में ऐसे किसानों की कमी नहीं है जिन्हें आधुनिक कृषि से जुड़ी न्यूनतम जानकारी भी नहीं है। ऐसे किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकों से जुड़ी जानकारी पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। निदेशक ने कहा कि आज अधिकतर किसानों की सोच है कि कृषि लाभकारी नहीं है। ऐसा वे इसलिए सोचते हैं क्योंकि कई किसान लागत भी नहीं निकाल पाते हैं। ऐसे में हम तब तक कामयाब नहीं हो सकते जब तक कि कृषि को पूर्ण रूप से लाभदायक नहीं बना दिया जाता। ऐसा तभी किया जा सकता है जब खेती में लागत कम से कम हो तथा पैदावार अधिक से अधिक हो। इसके अलावा उपज में मूल्यवर्द्धन भी किया जाना चाहिए, ताकि बाजार में इसे आसानी से खपाया जा सके।

- किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकों की जानकारी देना जरूरी

पटरी पर बेचने से शुरुआत

पटरी पर अचार बेचने से लेकर फैक्ट्री की मालकिन बनने तक नजफगढ़ की कृष्णा का सफर कई लोगों के लिए प्रेरणादायी है। शुरुआत नजफगढ़ स्थित अपने घर पर अचार बनाकर घर के सामने पटरी पर बेचने से हुई। बाद में कृष्णा ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से प्रशिक्षण लेकर अचार बनाने की कला का व्यवसायिक प्रशिक्षण लिया। फिर धीरे-धीरे कृष्णा ने अपनी सृजनात्मकता से अचार, जूस, जैम बनाने की खुद की विधि बनाई। धीरे-धीरे धंधा चल पड़ा।

सफल कृषकों में गिनती

कभी गरीबी से जूझ रहे नजफगढ़ के प्रताप सिंह आज खुशहाल हैं। करीब दो दशक पूर्व जब उन्होंने अपने गांव में मधुमक्खी पालन शुरू किया था तब लोग उनकी हंसी उड़ाते थे, लेकिन प्रयोगधर्मिता के बूते आज उनकी गणना सफल कृषकों में होती है। शहद व इससे जुड़े उत्पाद की बिक्री से उन्हें खासा मुनाफा होता है। प्रताप बताते हैं कि मधुमक्खी पालन ऐसा व्यवसाय है जिसमें न मकान, न बिजली की जरूरत होती है। जमीन भी नाममात्र की लगती है।

28/09/15
प्रभारी, समाचार अनुभाग

1. निदेशक, भा० कृ० अ० सं०
2. संयुक्त निदेशक (प्रसार) "
3. " (शिक्षा) "
4. " (अनुसंधान) "
5. प्रभारी, पी.यू.आई०
6. प्रभारी, कटैट
7. प्रभारी, ए.के.एम.यू